5
पाँचवाँ भाग

आईए
नहजुल बलाग़ा
से सीखते हैं

जवानों के नाम
हज़रत अली[अ0]
की वसिय्यत

हुज्जतुल इस्लाम
जवाद मोहद्दिसी
ट्रांस्लेशन : अब्बास असग़र शबरेज़

आइए
नहजुल बलाग़ा
से सीखते हैं

जवानों के नाम
हज़रत अली[अ0]
की वसिय्यत

हुज्जतुल इस्लाम
जवाद मोहद्दिसी
ट्रांस्लेशनः अब्बास असग़र शबरेज़
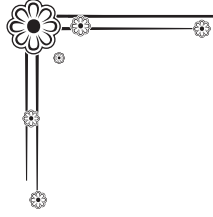
किताब : जवानों के नाम हज़रत अली[अ०] की वसिय्यत

राइटर : हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी

ट्रांस्लेटर : अब्बास असग़र शबरेज़

पहला प्रिन्ट : दिसम्बर 2016

तादाद : 2000

पब्लिशर : ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ
9956620017, 8090775577

प्रेस : न्यु लाइन प्रोसेस, दिल्ली

क़ीमत : 25 रूपए
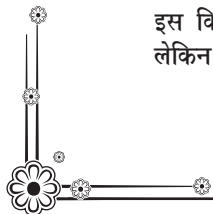
शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

नहजुल बलाग़ा में इमाम अली[अ०] की ज़िंदगी की झलकियाँ साफ़ दिखाई पड़ती हैं। इमाम अली[अ०] का कलाम भी बिल्कुल उन्हीं के जैसा है क्योंकि कोई भी आदमी हो उसकी ज़बान से निकलने वाली बातें असल में उसकी रूह (आत्मा) से ही निकल रही होती हैं यानी उसकी बातें उसकी रूह और उसकी सोच का पता देती हैं। एक नीच रूह की बातें भी गिरी हुई ही होती हैं और एक महान रूह की बातें व सोच भी महान होती है। वन-डायमेंश्नल रूह का कलाम भी वन-डायमेंश्नल ही होता है और जिसकी रूह मल्टी-डायमेंश्नल होती है उसका कलाम भी मल्टी-डायमेंश्नल होता है। इस दुनिया में इमाम अली[अ०] एक ऐसी हस्ती का नाम है जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी नहीं है इसलिए उनका कलाम भी ऐसा है जिसमें किसी भी हिसाब से कोई कमी नहीं है। उनके कलाम में इरफ़ान भी अपने सब से ऊँचे दर्जे पर पाया जाता है और फ़िलॉस्फ़ी भी, आज़ादी व जँग भी अपनी आख़िरी ऊँचाईयों पर दिखाई देती है तो अख़्लाक़ भी अपने आसमान पर दिखाई देता है।

इसलिए नहजुल बलाग़ा भी इमाम अली[अ०] की तरह हर हिसाब से एक ऐसी किताब है जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी नहीं है।
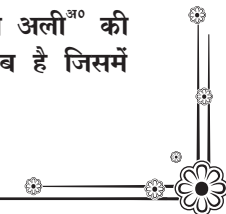
contents

अपनी बात...5
इन्सान और ज़माने के बारे में..................................7
यह वसिय्यत क्यों लिखी गई है ?...............................9
तज़किय-ए-नफ़्स..11
समाजी ड्युटी..18
बच्चों की परवरिश..21
कैसे क्या जाए..24
तौहीदी सोच..28
दुनिया और मौत...32
समाजी मेल-जोल...34
आख़िरी सफ़र की तैयारी...................................36
ख़ुदा की रहमत की निशानियाँ.............................38
दुनिया और मौत के बारे में कुछ बातें.......................41
अख़्लाक़ी नसीहतें..44
दोस्तों का हक़..48
अख़्लाक़ी वेल्युज..51
औरतों के बारे में कुछ ख़ास बातें............................54

अपनी बात

नहजुल बलाग़ा में हज़रत अली[अ०] के ख़ुतबों के अलावा बहुत से ख़त भी हैं जो उन्होंने अपने ज़माने के बहुत से लोगों को लिखे थे। उन्हीं में से एक ख़त इमाम अली[अ०] ने अपने बड़े बेटे इमाम हसन[अ०] के नाम भी लिखा था। यह ख़त इमाम अली[अ०] ने जंगे सिफ़्फ़ीन से वापसी पर लिखा था जिसमें अपने बेटे को अपने तजुर्बे, ज़माने की मक्कारियाँ, दुनिया की असलियत (Reality), आख़िरत के रास्ते और दुनिया में ज़िन्दगी बसर करने के सुनहरे क़ानून बताए हैं। सच यह है कि यह कोई ख़त नहीं है बल्कि एक वसिय्यत है जो इमाम हसन[अ०] के नाम लिखी गई है लेकिन यह वसिय्यत हर ज़माने के हर इन्सान, क़यामत तक आने वाले हर मुसलमान और मुसलमान उम्मत के हर जवान के लिए है। इस वसिय्यत को पढ़ने, समझने और इस पर अमल करने से जहाँ इस दुनिया में अनगिनत फ़ाएदे हैं वहीं आख़िरत में भी यह वसिय्यत बहुत काम आने वाली है।

जो किताब आपके हाथों में है इसमें कोशिश की गई है कि नेहजुल बलाग़ा में लिखी बातों को बिलकुल आसान ज़बान में अपने उन नौजवानों के सामने पेश किया जाए जो हज़रत अली[अ०] के कलाम को पढ़ना और समझना चाहते हैं।

इस किताब में हज़रत अली[अ०] की इस वसिय्यत को

ट्रॉस्लेशन और थोड़ी वज़ाहत (Explanation) के साथ पेश किया जा रहा है।

यह किताब इस सिलसिले की पाँचवीं कड़ी है। इस किताब के अगले हिस्से भी इंशाअल्लाह जल्दी ही आपके सामने पेश किए जाएंगे ताकि हम अपने पालने वाले से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें।

यह किताब आपके हाथों में है। इसे पढ़ने के बाद जो कमियाँ आपको नज़र आएं वह हमें ज़रूर बताईए ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया जा सके।

इस सिलसिले में हम जनाब अज़ीज़ ज़ैदी साहब के तहे दिल से शुक्रगुज़ार हैं जिनके तआवुन और मश्वरों से हम यह सीरीज़ आप तक पहुँचा रहे हैं।

ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ
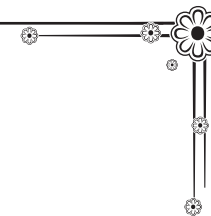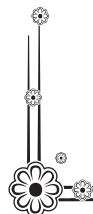
इन्सान और ज़माने के बारे में

यह वसिय्यत उस बाप की तरफ़ से है जो एक दिन ख़त्म हो जाने वाला और ज़माने की मक्कारियों को जान चुका है। जिसकी उम्र पीठ दिखा रही है, जो ज़माने की सख़्तियों के सामने लाचार है, जो दुनिया की बुराईयों का एहसास कर चुका है, जो मरने वालों के घरों में ठहरा हुआ है और कल को यहाँ से सफ़र पर निकलने वाला है।

यह वसिय्यत उस बेटे के नाम है जो न मिल पाने वाली चीज़ों के पीछे भागने वाला, मौत के रास्ते का मुसाफ़िर, बीमारियों का निशाना, ज़माने के हाथ गिरवी, मुसीबतों का निशाना, दुनिया का पाबन्द, उसके धोखे का ख़रीदार, मौत का क़र्ज़दार, अजल (मौत) का क़ैदी, ग़मों का साथी, परेशानियों में उलझा, मुसीबतों में घिरा, अपने दिल से परेशान और मरने वालों का जानशीन है।

तशरीह (Explanation)

अपनी वसिय्यत के इस पहले हिस्से में इमाम अली[अ०] आम इन्सानों के बारे में बात कर रहे हैं कि जब इन्सान पचास-साठ साल की ज़िन्दगी बिताकर इस दुनिया से जाता है तो उसकी नज़र में ज़िन्दगी और दुनिया कैसी होती है। इमाम अली[अ०] यह भी बताना चाह रहे हैं कि दूसरी तरफ़ उसकी जवान औलाद की क्या चाहतें और तमन्नाएँ होती हैं।

यह वसिय्यत एक ऐसे बाप की तरफ़ से है जिसके अंदर यह बातें पाई जाती हैं:

1- वह दुनिया को छोड़कर जाने वाला है क्योंकि यह दुनिया हमेशा के लिए नहीं है।

2- हालात ने उस पर भी अपना असर डाला है।

3- जो एक उम्र बिता चुका है और ज़िन्दगी का तजुर्बा पा चुका है।

4- जो हालात के सामने हथियार डाल चुका है।

5- जिसकी नज़र में दुनिया की कोई हैसियत नहीं है। यह दुनिया इस लायक़ है ही नहीं कि इन्सान इस से दिल लगाए।

6- जिसे दुनिया में रहना ही नहीं है बल्कि एक दिन यहाँ से चले जाना है।

जिन जवानों के लिए यह वसिय्यत लिखी गयी है उनके अंदर यह बातें पाई जाती हैं:

1- वह उन कामों और उन चीज़ों के पीछे भागते हैं जिनका होना और जिन्हें पा पाना नामुमकिन है।

2- जो उन लोगों के रास्ते पर चल रहे हैं जिन्हें एक दिन ख़त्म हो जाना है।

3- तरह-तरह की बीमारियाँ जिनके सामने मुँह खोले खड़ी हैं।

4- जो दुनिया के हाथों खिलौना बनने वाले हैं और यह दुनिया उन्हें अपनी उँगलियों पर नचाने वाली है।

5- जो दुनिया में तरह-तरह की मुसीबतों व परेशानियों का शिकार होने वाले हैं।

6- जो अगर इस दुनियावी ज़िन्दगी में खो जाएं तो दुनिया के ग़ुलाम बन कर रहने वाले हैं।

7- जिन्हें दुनिया धोखा देने वाली है।

8- जो मौत से भाग नहीं सकते बल्कि उसके चंगुल में फंसने वाले हैं।

9- जो न चाहते हुए भी हमेशा परेशानियों में घिरे रहने वाले हैं।

10- जो इन सब बातों के नतीजे में हमेशा मुश्किलों में फंसे रहने वाले हैं।

12- उनकी जगह पाने वाले हैं जो दुनिया से जा चुके हैं।

यह वसिय्यत क्यों लिखी गई है?

मैंने दुनिया के मुँह फेर लेने, ज़माने की सख़्तियों और आख़िरत के तेज़ी से मेरी तरफ़ बढ़ने से जो सच्चाई जानी है उसने मुझे दूसरों के बारे में बात करने और ग़ैरों की फ़िक्र से रोक दिया था मगर जब मैं दूसरे सब लोगों की फ़िक्र से अलग होकर अपनी फ़िक्र में पड़ा तो मेरी राय ने मुझे मेरी चाहतों से रोक दिया और मेरे लिये यह सच्चाई साबित हो गई जिससे मेरा मामला खुलकर मेरे सामने आ गया और मैं सच्चाई की गहराई तक पहुँच गया। मैंने देखा कि तुम मेरा ही एक टुकड़ा हो बल्कि जो मैं हूँ वही तुम हो। यहाँ तक कि अगर तुम पर कोई मुसीबत आए तो जैसे मुझ पर ही आई है और तुम्हें मौत आए तो जैसे मुझे ही आई है। इस बात से मुझे तुम्हारा उतना ही ख़याल हुआ जितना अपना हो सकता था। इसलिए तुम्हें रास्ता दिखाने के लिए मैंने यह वसिय्यत लिख दी है, चाहे इसके बाद मैं ज़िन्दा रहूँ या दुनिया से उठ जाऊँ।

तशरीह (Explanation)

इमाम अली[अ०] वसिय्यत के इस दूसरे हिस्से में अपनी इस वसिय्यत की वजह बताते हुए दो बहुत ख़ास बातों की तरफ़ इशारा कर रहे हैं:
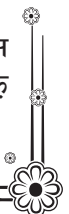
एक यह कि अगर इन्सान दुनिया की इस भाग-दौड़ से अलग होकर अपने ऊपर ज़रा ध्यान दे तो दुनिया और इस ज़िन्दगी की सच्चाई अपने आप उसकी समझ में आ जाएगी। अगर इन्सान अपनी और इस दुनिया की असलियत (Reality) की तरफ़ ध्यान दे ले तो यही उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ है।

दूसरे यह कि जब असलियत खुल कर इन्सान के सामने आ जाए तो ज़रूरी है कि वह उन लोगों को भी इस रास्ते पर लाने की कोशिश करे जो बेध्यानी में कहीं और खोए हुए हैं, ख़ास कर एक बाप के लिए ज़रूरी है कि वह अपने बच्चों को अपना ही एक हिस्सा समझ कर उन्हें अच्छी बातें बताए। उसने दुनिया से जो तजुर्बे सीखे हैं वह उन्हें बताए ताकि वह भी अपनी ज़िन्दगी के उतार-चढ़ाव में उन बातों से सीख ले सकें।
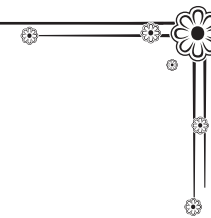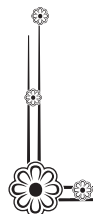
तज़्किय-ए-नफ़्स

(Self-purification)

मैं वसिय्यत करता हूँ कि अल्लाह से डरते रहना। उसके हुक्म की पाबन्दी करना। उसके ज़िक्र (याद) से अपने दिल को आबाद रखना और उसकी रस्सी को मज़बूती से थामे रहना। तुम्हारे और अल्लाह के बीच जो रिश्ता है उस से ज़्यादा मज़बूत रिश्ता भला कौन सा हो सकता है। लेकिन शर्त यह है कि मज़बूती से इसे थामे रहो। अच्छी बातों से अपने दिल को ज़िन्दा रखना और ज़ोहद (Asceticism) से इसकी चाहतों को मार देना। यक़ीन से इसे सहारा देना और हिकमत (Wisdom) से इसे नूरानी बनाना। मौत की याद से इसे कँट्रोल में रखना। तुम्हें एक दिन ख़त्म हो जाना है, यह सच्चाई समझाकर अपने दिल को ठहराना और इत्मिनान दिलाना। दुनिया के उथल-पुथल उसके सामने रखना। ज़माने की ऊँच-नीच से उसे डराना। गुज़रे हुओं के क़िस्से उसे सुनाना। तुम्हारे पहले वाले लोगों पर जो बीती है उसे याद दिलाना। उनके घरों व खंडरों में अपने दिल को चलाना-फिराना और देखना कि उन्होंने क्या कुछ किया। कहाँ से चले, कहाँ उतरे और कहाँ ठहरे। अगर तुम देखोगे तो तुम्हें साफ़ दिखाई देगा कि वह दोस्तों से मुँह मोड़कर चल दिये हैं और परदेस के घर में जाकर उतर गए हैं।
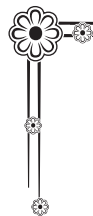
वह वक़्त दूर नहीं है कि जब तुम भी उन्हीं में गिने जाने लगोगे। इसलिए अपनी असले ठिकाने का इन्तेज़ाम कर लो और अपनी आख़िरत को दुनिया के हाथों मत बेचो। जो चीज़ नहीं जानते हो उसके बारे में मत बोलो और जिस चीज़ का तुम से कोई लेना-देना नहीं है उसके बारे में ज़बान न हिलाओ। जिस रास्ते में भटक जाने का ख़तरा हो उस रास्ते पर क़दम न उठाओ क्योंकि भटक जाने से पैदा हुई परेशानियाँ देखकर क़दम रोक लेना ख़तरों को मोल लेने से कहीं अच्छा है।

तशरीह (Explanation)

इमाम अली[अ०] रूह (आत्मा) की पाकीज़गी के लिए इमाम हसन[अ०] को वसिय्यत करके दुनिया के सारे जवानों को कुछ बहुत ख़ास बातें समझा रहे हैं:

तक़्वा (Piousness)

इन्सान को चाहिए कि वह अपने अन्दर वह ईमानी जोश पैदा करे जो उसे ख़ुदा के रास्ते पर चलाए रखे और रास्ते में आने वाले ख़तरों की तरफ़ उसे ध्यान दिलाती रहे। इसी को तक़्वा कहते हैं। जिस इन्सान के पास तक़्वा होता है वह जहाँ सारे वाजिब कामों को पूरा करता है वहीं सारे हराम कामों से भी दूर रहता है। सही मायनी में ऐसे आदमी को ही मुत्तक़ी कहते हैं।

ख़ुदा का हुक्म मानना

इन्सान की कोशिश यही होना चाहिए कि उसकी पूरी ज़िंदगी का एक-एक पल ख़ुदा का हुक्म मानते हुए गुज़रे क्योंकि सिर्फ़ इसी रास्ते पर चलकर इन्सान अपने कमाल (Perfection) तक पहुँच सकता है।

ख़ुदा की याद

हदीस में है कि मोमिन का दिल अल्लाह का घर होता है।
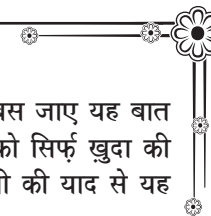
अल्लाह के घर में उसके अलावा कोई और बस जाए यह बात बिल्कुल सही नहीं है। इसलिए हमारे दिलों को सिर्फ़ ख़ुदा की याद से रौशन होना चाहिए क्योंकि सिर्फ़ उसी की याद से यह दिल सुकून पाते हैं।

अल्लाह की रस्सी को थामना

हदीसों में अल्लाह की रस्सी कई चीज़ों को कहा गया है जैसे क़ुरआन, रसूल[स०], अहलेबैत[अ०] वग़ैरा। एक हदीस में रसूल[स०] ने हज़रत अली[अ०] को भी अल्लाह की रस्सी बताया है।

दिल को अच्छी बातों से ज़िन्दा करना

क़ुरआन की आयतें, मासूमीन[अ०] की हदीसें, उलमा और मोमिनों की बातें सबसे अच्छी बातें होती हैं। इन बातों की ज़रूरत इसलिए होती है क्योंकि इन्सान का दिल कभी मुर्दा और कभी बोझल हो जाता है। इन बातों से दिल को बड़ी आसानी से तरो ताज़ा बनाया जा सकता है।

तक़्वा के रास्ते दिली ख़्वाहिशों (Worldly Desires) **को कुचलना**

इन्सान के दिल में उठने वाली ख़्वाहिशें व चाहतें ख़ुदा के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट बन जाती हैं जिनका बेहतरीन इलाज तक़्वा है। लेकिन तक़्वा का मतलब सोसाइटी से कट कर रह जाना और अपने घर में क़ैद हो जाना नहीं है बल्कि तक़्वा का मतलब यह है कि दिल में जो कुछ भी दुनिया की मोहब्बत है उसे बाहर निकाल दिया जाए और जो नेमतें ख़ुदा ने इन्सान को इस दुनिया में दी हैं उन्हें उतना ही इस्तेमाल करे जितनी उसे ज़रूरत है।

यक़ीन से अपने दिल को मज़बूत बनाना

दिल भी जिस्म के दूसरे हिस्सों की तरह बीमार और

कमज़ोर हो जाता है। इसकी कमज़ोरी की वजह ईमान की कमी और शकों में पड़ जाना होती है। इन्सान को जब भी कोई ईमानी कमज़ोरी महसूस हो और शक के बादल उसके दिल के आसमान पर छाने लगें तो उसे चाहिए कि अक़्ल व समझदारी का सहारा लेकर अपने ईमान को फिर से वापस लाए और यक़ीन हासिल करके अपने दिल को ताक़त पहुँचाए।

अच्छी बातों से दिल को नूरानी बनाना

दिल की दुनिया में भी कभी-कभी अंधेरा छा जाता है और ऐसा होना ख़तरे की घंटी होती है। ऐसे में उसे अच्छी बातों के नूर से ही रौशन किया जा सकता है।

मौत को याद करके दिल को कंट्रोल करना

जब दिल में दुनिया की याद बस जाए तो दिल एक अड़यल घोड़े की तरह हो जाता है जिसको कंट्रोल कर पाना आसान नहीं होता। दुनिया की मोहब्बत के दिल पर छा जाने का एक असर यह होता है कि इन्सान दुनिया को ही अपनी असली जगह समझने लगता है कि बस अब तो यहीं रहना है और यह भूल जाता है कि एक दिन उसे यहाँ से कहीं और भी जाना है। इसका दूसरा ग़लत असर यह होता है कि इन्सान अपने कामों से लापरवाह हो जाता है जैसे उसे अपने किसी काम का हिसाब-किताब देना ही नहीं है। इस बीमारी का बेहतरीन इलाज मौत और क़यामत की याद है। यह दोनों चीज़ें उसे हमेशा याद दिलाती रहेंगी कि यह दुनिया है और यहाँ के एक-एक काम का एक दिन हिसाब देना है।

इन्सान को एक दिन ख़त्म हो जाना है

यूँ तो यह एक सख़्त काम है लेकिन इन्सान के लिए यह एक बड़ी असरदार चीज़ है कि इन्सान का दिल इस बात को मान ले कि उसे एक दिन ख़त्म भी होना है और दूसरों की तरह उसे भी इस दुनिया को एक दूसरी दुनिया के लिए छोड़ कर जाना है।

अक़्ल और समझदारी

इन्सान का दिल उसी वक़्त अपने ख़त्म होने को मान सकता है जब उसे दुनिया की मुसीबतों और परेशानियों को दिखाकर अक़्ल व समझदारी भी सिखाई जाए। जब इन्सान के अंदर समझदारी आ जाएगी तो वह दुनिया की मोहब्बत को कभी गले ही नहीं लगाएगा।

अपने आपको डराना

इन्सान को चाहिए कि वह हमेशा अपने आपको दुनिया के ख़तरों से डराता रहे क्योंकि जब हालात तरह-तरह से हमला करते हैं तो इन्सान डगमगा जाता है। अगर गुमराही, बेदीनी और शैतानी शक्ल में दूसरे इन्सानों के हमलों के ख़तरे इन्सान की निगाह में होंगे तो वह सही रास्ते पर चलता रहेगा वरना भटक जाएगा।

पिछली क़ौमों से सीख लेना

अपने आपको समझाने का एक तरीक़ा यह भी है कि इन्सान पिछले लोगों की ज़िन्दगी और उनके बुरे हालात को देखकर सीख लेता रहे ताकि वह ख़ुद उन बुरे हालात में न फंस जाए जिनमें पिछली क़ौमें फंस गई थीं। क़ुरआन मजीद ने क़िस्सों की शक्ल में हमारे सामने इसकी बहुत सी बेहतरीन मिसालें रखी हैं। क़ौमे आद, क़ौमे समूद और बनी इस्राईल इसके खुले नमूने हैं।

पिछली क़ौमों से जुड़ी चीज़ों से सीख लेना

सीख लेने के लिए न सिर्फ़ यह कि पिछले लोगों और पिछली क़ौमों की हिस्ट्री को पढ़ना ज़रूरी है बल्कि ज़मीन पर उनके बारे में जो चीज़ें मौजूद हैं उन पर ध्यान देना भी ज़रूरी है क्योंकि ध्यान देने के बाद ही किसी चीज़ से सीख ली जा सकती है। मिस्र, रोम व यूनान और दूसरी ज़मीनों पर आज भी पिछली क़ौमों और नबियों की उम्मतों से जुड़ी चीज़ें मौजूद हैं जो सीख लेने का बेहतरीन सोर्स हैं।
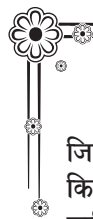
इमाम अली[अ०] ने हमें इन सारी बातों की वसिय्यत की है जिसका मतलब यह है कि इन्सान इस बात की तरफ़ ध्यान दे कि उसे भी एक दिन इस दुनिया से जाना है। इसलिए उसे चाहिए कि वह ऐसी हिस्ट्री बनाए जो दूसरों के लिए एक मिसाल हो।

क़यामत को दुनिया के बदले में न बेचना

रसूले इस्लाम[स०] की एक हदीस में है कि दुनिया मरने के बाद की ज़िंदगी की खेती है। इस हदीस का मतलब यह है कि यह दुनिया सिर्फ़ एक रास्ता है, ठहरने की जगह नहीं है। हमारा असली सफ़र मरने के बाद शुरू होता है जहाँ हमें हमारी इस ज़िंदगी का फल मिलेगा। लेकिन अगर कोई इसी दुनिया में अपनी अगली ज़िंदगी को बेच दे और फिर सिरे से क़यामत को ही भुला बैठे तो उसे वहाँ कुछ भी नहीं मिलने वाला। यह कितने घाटे का सौदा है कि इन्सान चार दिन की इस वक़्ती ज़िन्दगी को मरने के बाद की हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी से बड़ा समझ बैठे और अपनी अगली ज़िंदगी इसी दुनिया में कोड़ियों के भाव बेच दे!

अगर पता न हो तो चुप रहना ही अच्छा है

यह ज़िन्दगी का एक बहुत ख़ास क़ानून है कि इन्सान सिर्फ़ उसी चीज़ के बारे में बात करे जिसके बारे में उसे पता हो। जिस चीज़ के बारे में उसे पता ही न हो उसके बारे में चुप रहना ही अच्छा है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं कि अगर तुम से किसी चीज़ के बारे में पूछा जाए और तुम्हें उसके बारे में पता न हो तो यह कहने में बिल्कुल न शरमाओ कि 'मुझे नहीं पता'।

जिस बात का तुम से कोई मतलब न हो उसके बारे में चुप रहो

सिर्फ़ इतना ही काफ़ी नहीं है कि इन्सान किसी चीज़ के
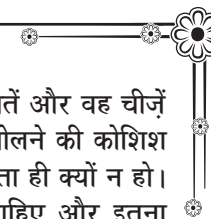
बारे में पता न होने पर चुप रहे बल्कि वह बातें और वह चीज़ें जो इन्सान से न जुड़ी हों उनके बारे में भी बोलने की कोशिश नहीं करना चाहिए, चाहे उनके बारे में उसे पता ही क्यों न हो। यानी इन्सान वहाँ बोले जहाँ उसे बोलना चाहिए और इतना बोले जितना बोलना चाहिए।

जिन चीज़ों के बारे में शक हो उन से दूर रहो

ज़िन्दगी में बहुत से काम और बहुत सी बातें ऐसी भी होती हैं जिनके बारे में इन्सान को पूरी तरह पता नहीं होता यानी उनके सही या ग़लत होने, हलाल या हराम होने और जायज़ या नाजायज़ होने के बारे में शक होता है। साथ ही उसे उनके अंजाम की भी ख़बर नहीं होती कि क्या होने वाला है। ऐसे कामों और ऐसी बातों में फ़ायदे के बजाय नुक़सान का ख़तरा बहुत ज़्यादा होता है। इसलिए इस तरह की बातों या ऐसे कामों से अपने आपको दूर कर लेना ही ठीक है।
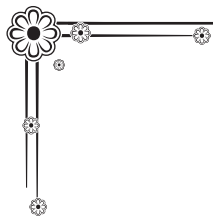
समाजी ड्युटी

लोगों को अच्छाईयों के बारे में बताओ ताकि तुम ख़ुद भी अच्छे लोगों में गिने जा सको। हाथ और ज़बान से बुराई को रोकते रहो। जहाँ तक हो सके बुरों से दूर रहो। ख़ुदा के रास्ते पर चलते हुए जिहाद का हक़ अदा करो और इस बारे में किसी बुराई करने वाले की बुराई का असर मत लो। हक़ जहाँ भी हो, सख़्तियों में फाँद कर उस तक पहुँच जाओ। दीन में सूझबूझ पैदा करो। सख़्तियों को झेल ले जाने के आदी बनो। हक़ के रास्ते में सब्र ही सब से अच्छा काम है। हर मामले में ख़ुद को अल्लाह के हवाले कर दो क्योंकि ऐसा करने से तुम ख़ुद को एक मज़बूत क़िले में पहुँचा दोगे। सिर्फ़ अपने पालने वाले से माँगो और उसी के सामने हाथ फैलाओ क्योंकि देना और न देना बस उसी के हाथ में है। ज़्यादा से ज़्यादा अपने अल्लाह से भलाई चाहो। मेरी वसिय्यत को समझना और इस से मुँह न मोड़ना। अच्छी बात वही है जो फ़ायदेमंद हो। उस इल्म में कोई भलाई नहीं जो फ़ायदेमंद न हो और जिस इल्म का सीखना सही न हो उस से कोई फ़ायदा भी नहीं उठाया जा सकता।

तशरीह (Explanation)

इन्सान सिर्फ़ अपने आप को ही सही रास्ते पर ले आने
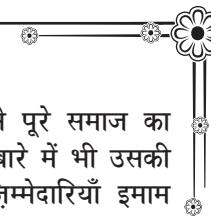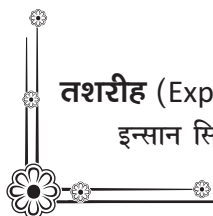
का ज़िम्मेदार नहीं है बल्कि इस्लाम ने उसे पूरे समाज का ज़िम्मेदार भी बनाया है। दीन ने दूसरों के बारे में भी उसकी ज़िम्मेदारियाँ तय की हैं जिनमें से कुछ ज़िम्मेदारियाँ इमाम अली[अ०] ने इस वसिय्यत में हमें बताई हैं जो इस तरह हैं:

अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर

(अच्छाईयों की तरफ़ बुलाना और बुराईयों से रोकना)

यह एक ऐसा ज़रूरी काम है जो हर मुसलमान की समाजी ड्युटी है लेकिन इसकी अपनी कुछ शर्तें भी हैं जिनका समझना भी ज़रूरी है। यह शर्तें क्या हैं और कैसी हैं इस पर अभी बात नहीं करना है, इसके लिए अलग से किताबें मौजूद हैं उन किताबों को पढ़ा जा सकता है। बहरहाल यह एक ऐसी ड्युटी है जिसे हर एक पूरा नहीं कर सकता। कभी ऐसा भी होता है कि इन्सान अपनी समझ के हिसाब से किसी अच्छाई का हुक्म दे रहा होता है लेकिन दरअसल वह सामने वाले को बुराई पर उकसा रहा होता है। इसलिए इस मौक़े पर बहुत होशियारी की ज़रूरत है।

बुरे लोगों से दूर रहना

बुरे लोगों के साथ दोस्ती और बुरी जगहों पर उठने-बैठने से इन्सान के ऊपर बहुत उलटा असर पड़ता है। इसलिए इन बातों से बचना ही अच्छा है। वैसे इसका मतलब यह नहीं है कि इन्सान इन लोगों से सिरे से ही दूर हो जाए क्योंकि कभी-कभी बुरे लोगों को बुराई से निकालने के लिए उनके साथ मेलजोल भी रखना पड़ता है। यहाँ उस वक़्त की बात की जा रही है जब इन्सान के ख़ुद अपने बहकने और गुमराह हो जाने का ख़तरा हो जैसे म्युज़िकल पार्टियाँ, बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना, बुरी फ़िल्में, मिक्स्ड गैदरिंग वग़ैरा या ऐसी जगह जहाँ आमतौर पर ग़ीबत होती हो या झूठ बोला जाता हो।

ख़ुदा की राह में जिहाद

यहाँ जिहाद का मतलब ख़ुदा के रास्ते पर चलते हुए हर तरह की कोशिश करना और इस रास्ते में सख़्तियाँ उठाना है
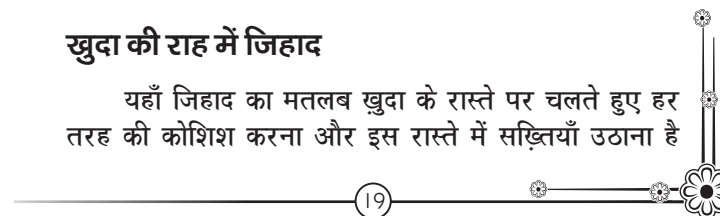
क्योंकि जो सख़्तियों को बर्दाश्त न कर सकता हो वह ख़ुदा के लिए कोई काम कर ही नहीं सकता।

बुराई करने वालों की बुराई से न घबराना

जब इन्सान ख़ुदा के रास्ते पर क़दम उठाता है तो सैंकड़ों मुश्किलें और रुकावटें उसके रास्ते में आ जाती हैं जिनमें से एक बड़ी मुश्किल दूसरे लोगों के ताने, बुराईयाँ और चुग़लख़ोरियाँ होती हैं लेकिन जो ख़ुदा के लिए निकला हो वह इन चीज़ों से घबराकर पीछे नहीं हटता बल्कि अपने रास्ते पर चलता रहता है। वह हक़ के लिए क़दम बढ़ाता है और इस रास्ते की हर सख़्ती को झेल लेता है जैसे हमारे इमामों ने किया।

पूरी जानकारी

समाजी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की एक शर्त दीन के बारे में पूरी जानकारी और इल्म का होना भी है लेकिन इसका मतलब किताबों से लिया गया इल्म नहीं है बल्कि दीनी समझ है जिसके लिए किताबें सिर्फ़ एक सीढ़ी की तरह होती हैं।

अपने हर काम में ख़ुदा पर भरोसा करना

इन्सान जब भी ख़ुदा की राह में कोई कोशिश करे, सख़्तियाँ बर्दाश्त करे और अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करे तो किसी भी मामले में कभी भी अपने ऊपर या दूसरों पर भरोसा न करे बल्कि सब कुछ ख़ुदा के ऊपर छोड़ दे। रसूले इस्लाम[स०] हमेशा ख़ुदा से दुआ किया करते थे कि ऐ ख़ुदा! मुझे एक पल के लिए भी मेरे हाल पर मत छोड़ना बल्कि मेरे हर काम की बागडोर हमेशा तेरे हाथ में रहे।

इसके लिए ज़रूरी है कि इन्सान दिल की गहराईयों से दुआ करे और हर काम में अच्छाई के लिए बस ख़ुदा से ही दुआ मांगे।

बच्चों की परवरिश

(Upbringing)

ऐ बेटा! जब मैंने देखा कि मेरी अच्छी-ख़ासी उम्र हो गई है और हर दिन कमज़ोरी बढ़ती जा रही है तो मैंने वसिय्यत करने में जल्दी की। इस वसिय्यत में मैंने कुछ ख़ास बातें लिखीं हैं कि कहीं ऐसा न हो कि मौत मेरी तरफ़ दौड़ी चली आए और दिल की बात दिल ही में रह जाए या बदन की तरह अक़्ल व राय भी कमज़ोर पड़ जाए या वसिय्यत से पहले ही तुम पर कुछ चाहतें हमला कर दें या दुनिया के झमेले तुम्हें घेर लें कि तुम भड़क उठने वाले अड़यल ऊँट की तरह हो जाओ क्योंकि कम उम्र वाले इन्सान का दिल उस ख़ाली ज़मीन की तरह होता है जिसमें जो बीज डाल दिया जाए वह उग आता है। इसलिए इससे पहले कि तुम्हारा दिल सख़्त हो जाए और तुम्हारा दिमाग़ दूसरी बातों में लग जाए, मैंने तुम्हें सिखाने और बताने में पहल कर दी ताकि तुम अच्छी तरह अपनी अक़्ल के ज़रिये उन चीज़ों को अपनाने के लिए तैयार हो जाओ जिनके इम्तेहान और तजुर्बे की मुसीबत से तजुर्बेकारों ने तुम्हें बचा लिया है। इस तरह तुम तलाश करने की परेशानी से बेफ़िक्र और तजुर्बे की उलझनों से

आज़ाद हो। अब तजुर्बे व इल्म की वह बातें आसानी से तुम तक पहुँच रही हैं जिनको मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी लगाकर जमा किया है और फिर वह चीज़ें भी उभर कर तुम्हारे सामने आ रही हैं जिनमें से हो सकता है कि कुछ मेरी आँखों से ओझल हो गई हों।

ऐ बेटा! यूँ तो मैंने उतनी उम्र नहीं पाई है जितनी अगले लोगों की हुआ करती थी, फिर भी मैंने उनके रहन-सहन को देखा, उनके हालात पर ध्यान दिया और उनके छोड़े हुए निशानों में घूमा-फिरा। यहाँ तक कि जैसे मैं भी उन्हीं में का एक हो चुका हूँ बल्कि उन सब के हालात व जानकारियाँ जो मुझ तक पहुँची हैं उनकी वजह से ऐसा है जैसे मैंने उनके पहले से लेकर आख़िर तक के साथ ज़िन्दगी बिताई है। इस तरह मैंने साफ़ को गंदे से और फ़ाएदे को नुक़सान से अलग करके पहचान लिया है और अब सबका निचोड़ तुम्हारे सामने रख रहा हूँ। मैंने अच्छाईयों को चुनकर तुम्हारे लिए समेट दिया है और फ़ाल्तू चीज़ों को तुम से दूर कर दिया है। मुझे तुम्हारी हर बात का उतना ही ख़याल है जितना एक मेहरबान बाप को होना चाहिए। मुझे तुम्हारी अच्छी परवरिश की फ़िक्र भी है जिसके लिए ज़रूरी है कि तुम्हें ऐसे पाला जाए जैसे तुम अभी-अभी इस दुनिया में आए हो और तुम्हारी नियत खरी और दिल पाक हो।

तशरीह (Explanation)

अपनी वसिय्यत के इस हिस्से में हज़रत अली[अ०] औलाद के बारे में बाप की ड्युटी बता रहे हैं कि एक बाप को किस तरह अपने बच्चों को पालने का ध्यान रखना चाहिए। इस बारे में इमाम[अ०] ने कुछ बहुत ख़ास बातों की तरफ़ इशारा किया है:

इस से पहले कि ज़माना गुज़र जाए और इन्सान मौत की
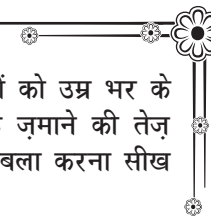
चादर औढ़ ले, उसे चाहिए कि अपने बच्चों को उम्र भर के अपने तजुर्बों की जानकारी दे दे ताकि वह ज़माने की तेज़ हवाओं और बिगड़ते-बनते हालात का मुक़ाबला करना सीख जाएं।

किसी भी जवान का दिल उस नर्म और नाज़ुक टहनी की तरह होता है जिसे जैसे चाहो मोड़ दो लेकिन अगर वह सख़्त और मज़बूत हो जाए तो फिर उसे सीधा नहीं किया जा सकता बल्कि सिर्फ़ तोड़ा जा सकता है। इसलिए बच्चों को कैसे पाला जाए, इसे किसी भी तरह अंदेखा करना ठीक नहीं है।

जवानों के लिए भी ज़रूरी है कि वह अपने बुज़ुर्गों के तजुर्बों से सीख लें ताकि वह उन तजुर्बों पर दोबारा तजुर्बे न करें बल्कि उन से आगे निकल कर तजुर्बों की नई दुनिया में पर लगाकर उड़ जाएं।

कैसे क्या जाए?

मैंने चाहा था कि पहले तुम्हें ख़ुदा की किताब, शरीअत के अहकाम (Islamic Law) और हलाल व हराम के बारे में बताऊँ और इसके अलावा किसी दूसरी चीज़ को न छेड़ूँ लेकिन फिर यह डर लगा कि कहीं तुम भी उन लोगों की तरह न उलझ जाओ जो अपने मनगढ़त अक़ीदों में उलझ गए हैं। यूँ तो इस बारे में तुम से बात करना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है लेकिन मुझे उम्मीद है कि अच्छे काम करने के लिए ख़ुदा तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाएगा। यही वह सारी बातें हैं जिनकी वजह से मैंने यह वसिय्यत लिखी है।

बेटा याद रखो! मेरी इस वसिय्यत से जिन चीज़ों की तुम्हें पाबन्दी करना है उनमें सबसे ऊपर अल्लाह का तक़वा है और यह कि जो ज़िम्मेदारियाँ अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें दी गई हैं उन्हें पूरा करो और जिस रास्ते पर तुम्हारे बाप-दादा और तुम्हारे घराने के नेक लोग चलते आए हैं उसी पर चलते रहो क्योंकि उन्होंने अपने बारे में ऐसी किसी चीज़ को नहीं छोड़ा है जो तुम्हारी नज़र में है और जो तुम अपने लिए सोच-समझ सकते हो। उन्होंने भी ख़ूब ग़ौर किया

और इसी नतीजे तक पहुँचे कि अच्छी चीज़ों को ले लें और उन चीज़ों से दूर रहें जिनसे उनका कोई लेना-देना नहीं है। अब अगर तुम्हारा दिल इन चीज़ों को बिना जाने-पहचाने लेने के लिए तैयार नहीं है तो फिर इसकी तहक़ीक़ पूरी समझदारी के साथ होना चाहिए और शकों में नहीं पड़ना चाहिए और न ही झगड़ों में पड़ना चाहिए और इन मामलो में आगे बढ़ने से पहले अल्लाह से मदद माँगो और उसी से नेक कामों की दुआ करो। हर उस शक को छोड़ दो जो तुम्हें उलझा दे या गुमराही में डाल दे। फिर जब तुम्हें यह यक़ीन हो जाए कि अब तुम्हारा दिल साफ़ हो गया है और उसमें असर लेने की ताक़त पैदा हो गई है और तुम्हारी राय पक्की हो गई है तो फिर इन बातों पर ग़ौर करो जो मैंने तुम्हें बताई हैं। लेकिन अगर तुम्हारे हिसाब से तुम्हारी सोच व राय अभी भी डावाँडोल है तो समझ लो कि तुम भी रातों को अंधी ऊँटनी की तरह हाथ-पैर मारते रहोगे और अंधेरों में भटकते रहोगे और दीन का चाहने वाला वह नहीं है जो अंधेरों में हाथ-पाँव मारे और चीज़ों को एक-दूसरे में गुडमुड कर दे। अगर ऐसा है तो फिर ठहर जाना ही अच्छा है।

तशरीह (Explanation)

इमाम अली[अ०] हमें जहाँ यह बात बता रहे हैं कि एक बाप को अपने बच्चों की परवरिश की फ़िक्र होना चाहिए वहीं यह भी बता रहे हैं कि अपने बच्चों का कैसे पाला जाए ।

कुरआन करीम

क़ुरआन ख़ुदा का रास्ता दिखाने वाला सबसे बड़ा गाइड है। इन्सानों को रास्ता दिखाने के लिए जो भी नुस्ख़ा तैयार किया जा सकता था वह इस किताब में लिख दिया गया है।

इसलिए इस आसमानी किताब को पढ़ना और समझना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है क्योंकि यह इन्सान को जहाँ सोचने-समझने और ग़ौर करने पर उभारती है वहीं उसकी रूह (आत्मा) को तरो ताज़ा रखने में भी बहुत ख़ास रोल निभाती है। अगर कोई अपनी नौजवानी और जवानी में क़ुरआन से मोहब्बत कर बैठे तो उसकी ज़िंदगी, उसे रास्ता दिखाने और उसकी तरक़्क़ी व कामयाबी के लिए बस यही किताब काफ़ी है।

हलाल-हराम

एक बाप की ड्युटी यह भी है कि वह अपने बच्चों के बालिग़ होने से पहले उन्हें ख़ुदा के भेजे हुए शरई अहकाम (Islamic Law) भी सिखाए। फिर बच्चों के बालिग़ होते ही उन्हें ख़ुदा के हलाल व हराम भी सिखाए ताकि वह ज़िन्दगी के हर मैदान में शरीअत के हिसाब से ही अपनी ज़िंदगी बिताएं। हमारे समाज में माँ-बाप इसे अपनी ड्युटी नहीं समझते बल्कि वह समझते हैं कि यह उलमा की ड्युटी है जबकि सबसे पहले यह माँ-बाप की ही ड्युटी है।

यूँ तो इन दो चीज़ों को सिखाने के बाद एक बाप आराम से बैठ सकता है कि उसने अपनी ड्युटी पूरी कर दी है लेकिन इन्सान किसी वक़्त भी दुनियावी चाहतों और ज़माने की गुमराह कर देने वाली हवाओं का शिकार बन सकता है इसलिए इमाम अली[अ०] दूसरी कुछ बहुत ही ख़ास बातों की वसिय्यत भी कर रहे हैं:

तक़्वा

तक़्वा इतनी ख़ास चीज़ है कि इमाम अली[अ०] दूसरी बार अपने बेटे को इसकी वसिय्यत कर रहे हैं क्योंकि यही वह ताक़त है जो इन्सान को बहकने से बचा सकती है।

ख़ुदा के अहकाम पर भरोसा

इसका मतलब यह भी हो सकता है कि ख़ुदा ने जो चीज़ें

वाजिब की हैं उनके सहारे ही अपनी ज़िंदगी बिताई जाए लेकिन इसका एक मतलब यह भी हो सकता है कि सिर्फ़ ख़ुदा के अहकाम की तरफ़ ध्यान रखो और बाक़ी लोग क्या कहते हैं इसकी तरफ़ कान भी न धरो क्योंकि तुम्हारे लिए अल्लाह और उसका बताया हुआ रास्ता ही काफ़ी है।

नेक लोगों के रास्ते पर चलना

हो सकता है कि किसी इन्सान को यही न पता हो कि सही रास्ता कौन सा है और वह रास्ते को पहचान ही न पा रहा हो। ऐसे में कसौटी ख़ुदा के नेक बन्दे होते हैं क्योंकि वही बता सकते हैं कि ख़ुदा का रास्ता कौन सा है। इनमें भी सब से ऊपर रसूले इस्लाम[स०] और ख़ुद हज़रत अली[अ०] और अहलेबैत[अ०] हैं क्योंकि ख़ुदा और उसके रसूल ने क़ुरआन के बाद इन्हीं का दामन थामने का हुक्म दिया है।

सोचना-समझना

अगर किसी को ख़ुदा के नेक बन्दों का रास्ता समझ में न आ रहा हो या उसकी रूह (आत्मा) उनकी बातों को न अपना पा रही हो तो फिर यूँ ही आँख बन्द करके रास्ता न चुन ले बल्कि अपने इल्म और अपनी अक़्ल से काम ले, सोचे समझे, ग़ौर करे और फिर अपने रास्ते को चुने क्योंकि अगर ऐसा नहीं करेगा तो शक की अंधेरी वादी में फिसल जाएगा जहाँ से निकल पाना आसान नहीं है।

ख़ुदा से मदद चाहना

जब इन्सान सही रास्ते की तलाश में निकले तो ख़ुदा से मदद की दुआ भी करे ताकि ख़ुदा ख़ुद उसे सीधा रास्ता दिखाए क्योंकि वह जिसको रास्ता दिखा दे उसे कोई बहका नहीं सकता।

तौहीदी सोच

ऐ बेटा! अब मेरी वसिय्यत को समझो और यह जान लो कि जिसके हाथ में मौत है उसी के हाथ में ज़िन्दगी भी है। जो पैदा करने वाला है वही मारने वाला भी है। जो ख़त्म करने वाला है वही दोबारा पलटाने वाला भी है और जो बीमार डालने वाला है वही सेहत देने वाला भी है। यह दुनिया उसी तरह चलती रहेगी जिस तरह अल्लाह ने इसे चलाया है यानी नेमत, इम्तेहान, क़यामत में मिलने वाला बदला या वह बातें जो तुम नहीं जानते हो, अब अगर इसमें से कोई बात तुम्हारी समझ में न आए तो उसे अपनी जिहालत समझना क्योंकि तुम जब पैदा हुए थे तो जाहिल ही पैदा हुए थे। तुम ने बाद में जाना, समझा और पहचाना है। इसी लिए ऐसी चीज़ें कहीं ज़्यादा हैं जिन्हें हम नहीं जानते जिनसे इन्सान की अक़्ल दंग रह जाती है और नज़र बहक जाती है और बाद में असलियत (Reality) सामने आती है। इसलिए उसी का दामन थामे रहो जिसने तुम्हें पैदा किया है, रोज़ी-रोटी दी है और बिल्कुल ठीक-ठाक बनाया है। बस उसी की इबादत करो, उसी से माँगो और उसी से डरते रहो।

ऐ बेटा! याद रखो कि तुम्हें ख़ुदा के बारे में उस

तरह की ख़बरें कोई नहीं दे सकता जिस तरह अल्लाह के रसूल ने दी हैं। इसलिए उनको अच्छी नियत के साथ अपना रसूल और निजात दिलाने वाला रहबर (लीडर) मान लो। मैंने तुम्हें समझाने-बुझाने में कोई कमी नहीं की है। तुम कोशिश करने के बाद भी अपने फ़ाएदों और अच्छाईयों पर उतना नहीं सोच सकते जितना मैंने देख लिया है।

ऐ बेटा! याद रखो कि अगर तुम्हारे पालने वाले का कोई शरीक होता तो उसके भी रसूल आते और उसकी हुकूमत व सलतनत का भी कहीं न कहीं निशान दिखाई देता। उसके सिफ़ात (Atttributes) भी कुछ पता होते लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है। इसलिए ख़ुदा सिर्फ़ एक है जैसा कि उसने ख़ुद भी कहा है। उसके मुल्क में कोई उस से टकराने वाला नहीं है। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वह बिना किसी शुरूआत के हर चीज़ से पहले से है और बिना किसी आख़िरी हद के सब चीज़ों के बाद तक रहने वाला है--- अगर तुम ने इस सच्चाई को समझ लिया है तो फिर उस तरह अमल करो जिस तरह तुम जैसे मामूली हैसियत वाले, कमज़ोर, गिरे-पड़े और ख़ुदा का हुक्म मानने की चाहत रखने वाले, उसके अज़ाब से डरने वाले और उसकी नाराज़गी में हाजत रखने वाले किया करते हैं क्योंकि वह सिर्फ़ उन्हीं चीज़ों का हुक्म देता है जो अच्छी हैं और उन चीज़ों से दूर रहने को कहता है जो बुरी हैं।

तशरीह (Explanation)

वसिय्यत के इस हिस्से में भी इमाम अली[अ०] ने दुनिया की बात करते हुए कुछ ख़ास चीज़ों की तरफ़ ध्यान दिलाया है:

ख़ुदा ही इस दुनिया को पैदा करने वाला है

ख़ुदा ही सबका पैदा करने वाला है, वही सबका मालिक

है, वही ज़िंदगी व मौत देने वाला है और इस दुनिया में सब कुछ उसी की मर्ज़ी व कंट्रोल से होता है। वह जिस तरह पैदा करता है उसी तरह मौत भी देता है। जिस तरह उसने पहली बार पैदा किया है उसी तरह मौत देने के बाद दोबारा ज़िन्दा भी कर सकता है। शायद इन में से बहुत सी बातें इन्सान को अजीब सी लगें और उसकी समझ में न आएं लेकिन इन्सान को उनका इनकार नहीं करना चाहिए बल्कि उसे यह मानते हुए आगे बढ़ना चाहिए कि यह उसकी जिहालत ही है जिसकी वजह से यह बातें उसकी समझ में नहीं आ रही हैं क्योंकि इन्सान इस दुनिया के सारे राज़ों को जानता ही नहीं है बल्कि उसे तो पैदा ही किया गया है जाहिल बनाकर। वह जितना-जितना बड़ा होता जाता है और आगे बढ़ता जाता है उतना उतना उसकी जानकारी व इल्म भी बढ़ता जाता है। जितने-जितने राज़ उस पर खुलते जाते हैं उतना ही उसका ताज्जुब भी बढ़ता जाता है और साथ ही उसे यह भी अन्दाज़ा होने लगता है कि अभी भी वह जाहिल ही है। इसलिए उसका ध्यान सिर्फ़ ख़ुदा ही की तरफ़ होना चाहिए क्योंकि वही उसका पैदा करने वाला है, वही उसको रोज़ी-रोटी देने वाला है और वही इबादत के लायक़ भी है।

ख़ुदा के बाद नबी

ख़ुदा के बारे में जानना व समझना हर इन्सान के लिए ज़रूरी है लेकिन यह उसके बस से बाहर है इसलिए ख़ुदा ने रसूलों व नबियों को भेजा है जिनमें सबसे ऊपर आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] हैं और इन्सान उन्हीं के ज़रिए ख़ुदा को समझ सकता है बल्कि ख़ुदा के रास्ते पर कैसे चला जाए यह भी रसूल ही बताएंगे क्योंकि ख़ुदा का हुक्म पैग़म्बर ही के ज़रिए इन्सानों तक पहुँचता है।

ख़ुदा एक है

उसका कोई शरीक नहीं है यानी वह एक है। वह ख़ुदा जिसने इन्सानों को सीधा रास्ता दिखाने के लिए अपने नबियों को भेजा है वह ख़ुदा हर तरह से एक है। दुनिया में उसके सिवा
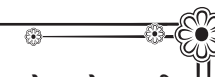
कोई ख़ुदा नहीं है क्योंकि अगर कोई और ख़ुदा होता तो वह भी अपने नबियों को भेजता, उनके ज़रिए अपना क़ानून भेजता, उसकी ख़ुदाई का असर भी दुनिया में कहीं न कहीं ज़रूर दिखाई देता लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है। जिसका सीधा सा मतलब यही है कि ख़ुदा एक ही है जो हमेशा से था और हमेशा रहेगा।

ख़ुदा की सिफ़तें

उसकी कुछ सिफ़तें (Attributes) भी हैं जिनके ज़रिए ही इन्सान उसके बारे में थोड़ा-बहुत जान सकता है: जैसे वह एक है, अज़ली है यानी हमेशा से है, अबदी है यानी हमेशा रहेगा, उसकी कोई शुरूआत नहीं है, उसका कोई आख़िर भी नहीं है, उसकी क़ुदरत की कोई सीमा नहीं है, वही सबका मालिक है, वही सबको रोज़ी-रोटी देने वाला है, दुनिया में उसी का हुक्म चलता है और जो रास्ता उसने बताया है वही बेहतरीन रास्ता है।
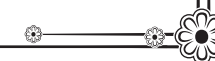
दुनिया और मौत

ऐ बेटा! मैंने तुम्हें दुनिया, इसके हालात और इसकी सच्चाई बता दी है। आख़िरत (क़यामत) और आख़िरत वालों को नेमतें मिलने वाली हैं, उनके बारे में भी तुम्हें बता दिया है। इन दोनों की मिसालें भी तुम्हारे सामने रख दूँ ताकि इन मिसालों (Examples) से सीखते हुए इस रास्ते की तैयारी के लिए जो कुछ करना हो वह कर लो। जिन लोगों ने दुनिया को ख़ूब समझ लिया है उनकी मिसाल उन मुसाफ़िरों के जैसी है जिनका उस जगह से दिल उचाट हो गया हो जो सूखे की चपेट में आ गई हो और जो एक हरी-भरी जगह की तरफ़ चल पड़े हों। उन्होंने इस रास्ते की परेशानियों को झेला, दोस्तों की जुदाई सही, सफ़र की मुश्किलें उठाई और बे मज़ा खानों पर सब्र किया ताकि बस किसी तरह अपने ठिकाने तक पहुँच जाएं। इस काम की धुन में उन्हें इन चीज़ों से किसी भी तकलीफ़ का एहसास नहीं होता और जितना भी ख़र्च हो जाए उसमें नुक़सान दिखाई नहीं देता। उन्हें अब सबसे ज़्यादा वही चीज़ पसंद है जो उन्हें उनके ठिकाने के पास ले जाए। इसके उलट दुनिया से धोखा खा जाने वालों की मिसाल (Example) उन लोगों के जैसी है जो एक हरे-भरे बाग़ से उकता जाएं और उस

जगह की तरफ़ चल पड़ें जो सूखे की चपेट में आ चुकी हो। इन लोगों के सामने सबसे बड़ी मुश्किल जब आएगी जब वह मौजूदा हालत को छोड़कर उधर जाएंगे जहाँ उन्हें अचानक पहुँचना है और बहरहाल पहुँचना है।

तशरीह (Explanation)

यहाँ इमाम अली[अ०] दुनिया और मौत के बाद की असलियत (Reality) की तरफ़ ध्यान दिला रहे हैंः

इमाम अली[अ०] फ़रमा रहे हैं कि इन्सान को दुनिया से ज़्यादा अपनी मौत के बाद का ध्यान होना चाहिए और किसी भी हालत में दुनिया को आगे नहीं रखना चाहिए क्योंकि दुनिया वक़्ती है और एक दिन ख़त्म हो जाने वाली है। अगर इन्सान इस बात को समझना चाहे तो यह देखे कि दुनिया में कितनी ज़्यादा मुश्किलें हैं और मरने के बाद के लिए उसके लिए क्या-क्या नेमतें तैयार करके रखी गई हैं।

जब इन्सान के सामने क़यामत की असलियत, वहाँ की नेमतें और कभी न ख़त्म होने वाला सुकून खुल कर आ जाएगा तो उसके लिए दुनिया की सख़्तियों को झेलना भी आसान हो जाएगा। अब इसके बाद अगर कोई सब कुछ जान लेने के बाद भी दुनिया को ही सब कुछ समझ बैठे तो उस से बड़ा बेवक़ूफ़ कोई नहीं है।

समाजी मेल-जोल

ऐ बेटा! अपने और दूसरों के बीच हर मामले में अपने आप को ही कसौटी बनाया करो। जो अपने लिए पसन्द करते हो वही दूसरों के लिए भी पसन्द करो और जो अपने लिए नहीं चाहते उसे दूसरों के लिए भी न चाहो। जिस तरह यह चाहते हो कि तुम पर ज़्यादती न हो वैसे ही दूसरों पर भी ज़्यादती न करो। जिस तरह यह चाहते हो कि तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव हो वैसे ही दूसरों के साथ भी अच्छा सुलूक करो। दूसरों की जिस चीज़ को बुरा समझते हो उसे अपने में भी बुरा समझो। लोगों के साथ जो तुम्हारा बर्ताव हो उसी बर्ताव को अपने लिए भी सही समझो। जो बात नहीं जानते उसके बारे में ज़बान न हिलाओ---। दूसरे लोगों के बारे में वह बात न कहो जो अपने लिए सुनना पसंद नहीं करते।

याद रखो! ख़ुद पसन्दी (Self-admiration) एक ग़लत तरीक़ा है जो अक़्ल की बर्बादी की वजह बन जाती है। रोज़ी कमाने में दौड़-धूप करो और दूसरों के ख़ज़ांची न बनो। अगर तुम्हारे दिल में सीधे रास्ते पर चलने का शौक़ पैदा हो जाए तो फिर जितना हो सके अपने पालने वाले के सामने अपना सर झुका दो।

तशरीह (Explanation)

इस हिस्से में इमाम अली[अ०] दूसरे इन्सानों के साथ मेल-जोल के लिए कुछ क़ानून बयान कर रहे हैं:

अपने और दूसरों के बीच फ़ैसले करने की बेहतरीन कसौटी इन्सान का अपना दिल है।

दूसरों के लिए वही पसन्द और नापसन्द करो जो अपनी पसन्द और नापसन्द हो।

ज़ुल्म करना और ज़ुल्म सहना दोनों ग़लत हैं।

जो इन्सान यह चाहता है कि उसके साथ अच्छा बर्ताव किया जाए उसे भी दूसरों के साथ अच्छा बर्ताव ही करना चाहिए।

जिस चीज़ को अपने लिए बुरा समझते हो उसे दूसरों के लिए भी बुरा समझो।

जिस बात का इल्म न हो उसके बारे में मत बोलो।

जो बातें अपने लिए नापसन्द करते हो वह दूसरों के बारे में भी न कहो जैसे किसी की ग़ीबत न करो।

ग़ुरूर वह चीज़ है जो इस्लाम पर चलने और अक़्ल के लिए ज़हर है।

दौलत जमा करना बहुत बुरी चीज़ है।

जब इस्लाम का रास्ता मिल जाए तो ख़ुदा के सामने अपना सर झुका दो।
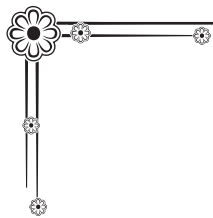
आख़िरी सफ़र की तैयारी

देखो! तुम्हारे सामने एक मुश्किलों भरा और लम्बा रास्ता है। इस रास्ते में काम आने वाली ज़रूरत की चीज़ों को अभी से इकट्ठा करना ज़रूरी है और यह भी ज़रूरी है कि यह रास्ते का सामान ऐसा हो जिससे चलने में परेशानी न हो। इसलिए अपनी ताक़त से ज़्यादा अपनी पीठ पर बोझ मत लादो वरना यह बोझ तुम्हारे लिए मुसीबत बन जाएगा। जब ऐसे भूखे-प्यासे लोग मिल जाएँ जो तुम्हारा सामान उठाकर क़यामत के मैदान में पहुँचा दें और कल को जब तुम्हें इसकी ज़रूरत पड़े तो तुम्हें दे दें तो इस मौक़े को ग़नीमत जानो और जितना हो सके उनकी पीठ पर रख दो क्योंकि हो सकता है कि फिर तुम ऐसे आदमी को ढूँढना चाहो और वह तुम्हें न मिले। आज जो तुम्हारी दौलतमन्दी की हालत में तुम से इस वादे पर क़र्ज़ माँग रहा है कि तुम्हारी ग़रीबी के वक़्त अदा कर देगा तो इस मौक़े को झपट लो।
याद रखो! तुम्हारे सामने एक मुश्किलों भरी घाटी है जिसमें हलका-फुलका आदमी भारी बोझ वाले आदमी से कहीं अच्छी हालत में होगा। रेंग-रेंग कर चलने वाला तेज़-तेज़ दौड़ने वाले के मुक़ाबले में बहुत बुरी हालत में होगा और इस रास्ते में यह तो तय है कि या तो तुम्हारा ठिकाना जन्नत होगा
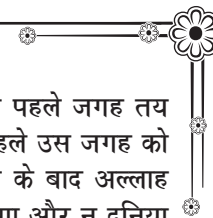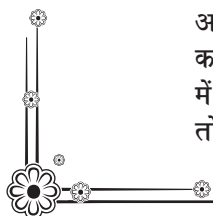
या जहन्नम। इसलिए उतरने से पहले जगह तय कर लो और पड़ाव डालने से पहले उस जगह को ठीक-ठाक कर लो क्योंकि मौत के बाद अल्लाह की मर्ज़ी पाने का मौक़ा नहीं होगा और न दुनिया की तरफ़ पलटने की कोई सूरत होगी।

तशरीह (Explanation)

हज़रत इमाम अली[अ०] वसिय्यत के इस हिस्से में मौत व क़यामत और इस सफ़र की तैयारी के बारे में हमें बता रहे हैं:

रास्ता बहुत सख़्त और लम्बा है। इसलिए इन्सान को इसी हिसाब से तैयारी भी करना चाहिए। इस सफ़र में काम आने वाला ज़रूरी सामान भी इस सफ़र को ध्यान में रखते हुए ही तैयार करना चाहिए।

इस सफ़र में गुनाह इन्सान के लिए एक ऐसा बोझ है जिसे उठाना उसके लिए बहुत सख़्त होगा। इसलिए इन्सान के कंधों पर गुनाहों का बोझ जितना कम होगा उसे सफ़र में उतनी ही आसानी होगी।

इन्सान के पास माल-दौलत का एक बड़ा भारी बोझ है लेकिन दुनिया में इस बोझ को उठाने वाले बहुत से फ़क़ीर मौजूद हैं जो क़यामत तक उसे एक अमानत के तौर पर ले जाएंगे और वहाँ वापस लौटा देंगे। इसलिए इन्सान जितना ज़्यादा फ़क़ीरों व ज़रूरतमन्दों को यहाँ दे देगा उतना ही उसका बोझ कम हो जाएगा। इसका सीधा सा मतलब यह है कि इन्सान को यह मौक़ा हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इसी तरह अगर किसी को क़र्ज़ की ज़रूरत है और इन्सान दे सकता है तो यह भी क़यामत में नेक आमाल की शक्ल में उसे लौटाया जाएगा।

क़यामत में इन्सान के दो ही ठिकाने हैं: जन्नत या जहन्नम और उनको चुनने का हक़ भी इन्सान के हाथ ही में है लेकिन यह चुनाव इसी दुनिया में करना है, न कि मरने के बाद। इन्सान अपने अच्छे कामों से जन्नत को भी चुन सकता है और बुरे कामों में उलझकर जहन्नम को भी अपना ठिकाना बना सकता है। क़यामत में न कुछ करने का मौक़ा है और न वापस दुनिया में आने की गुन्जाइश।
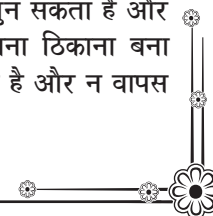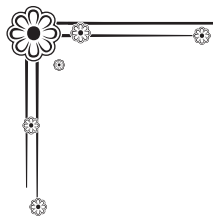
ख़ुदा की रहमत की निशानियाँ

यक़ीन करो! जिसके हाथ में आसमान व ज़मीन के ख़ज़ाने हैं उसने तुम्हें सवाल करने की छूट दे रखी है और मानने का ज़िम्मा लिया है और हुक्म दिया है कि तुम बस उसी से माँगो ताकि वह तुम्हें दे। उसी से रहम की दरख़्वास्त करो ताकि वह रहम करे। उसने अपने और तुम्हारे बीच पहरेदार खड़े नहीं कर रखे हैं जो तुम्हें रोकते हों। न तुम्हें इस पर मजबूर किया है कि अगर तुम किसी को उसके यहाँ सिफ़ारिश के लिए लाओगे तभी काम होगा। अगर तुम ने गुनाह किये हों तो उसने तुम्हारे लिए तौबा का रास्ता बंद नहीं किया है। न सज़ा देने में जल्दी की है और न तौबा के बाद वह कभी ताना देता है (कि तुम ने पहले यह किया था वह किया था)। न ऐसे मौक़ों पर उसने तुम्हें नीचा दिखाया है कि जहाँ तुम्हें नीचा दिखाया ही जाना चाहिए था। न उसने तौबा को मान लेने में कड़ी शर्तें लगाकर तुम्हारे साथ सख़्ती की है। न गुनाह के बारे में तुम से सख़्ती के साथ बहस करता है और न तुम्हें अपनी रहमत से मायूस करता है बल्कि उसने गुनाहों से दूरी को भी एक नेकी बताया है। अगर बुराई एक हो तो उसे एक बुराई और नेकी एक हो तो उसे दस नेकियों के बराबर ठहराया है। उसने तौबा का दरवाज़ा खोल रखा
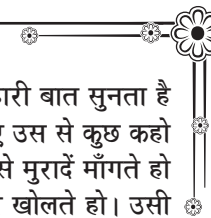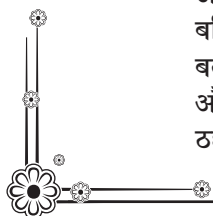
है। जब भी उसे पुकारो वह तुम्हारी बात सुनता है और जब भी मुनाजात करते हुए उस से कुछ कहो तो वह जान लेता है। तुम उसी से मुरादें माँगते हो और उसी के सामने दिल के भेद खोलते हो। उसी से अपने दुख-दर्द का रोना रोते हो और उसी के सामने मुसीबतों से निकालने की दुआ करते हो और अपने कामों में मदद माँगते हो। उसकी रहमत के ख़ज़ानों से तुम वह चीज़ें माँगते हो जो तुम्हें उसके अलावा कोई और दे ही नहीं सकता जैसे लम्बी उम्र, सेहत व ताक़त और रोज़ी-रोटी। उसने तुम्हारे हाथ में अपने ख़ज़ानों को खोलने वाली कुंजियाँ दे दी हैं और वह इस तरह कि तुम्हें अपने दरवाज़े पर सवाल करने का तरीक़ा बताया यानी तुम जब चाहो दुआ करके उसकी नेमत के दरवाज़ों को खुलवा सकते हो और उसकी रहमत की बारिश करवा सकते हो। हाँ! अगर कभी दुआ के पूरा होने में देर हो जाए तो उस से नाउम्मीद न हो जाना क्योंकि जो कुछ दिया जाता है वह नियत के हिसाब से दिया जाता है। अकसर दुआ के पूरा होने में इसलिए देर की जाती है कि माँगने वाले को ज़्यादा नेमतें दी जा सकें। कभी यह भी होता है कि तुम एक चीज़ माँगते हो और वह नहीं मिल पाती मगर दुनिया या आख़िरत में उस से अच्छी चीज़ तुम्हें मिल जाती है या तुम्हारे किसी बड़े फ़ाएदे को ध्यान में रखते हुए तुम्हें वह चीज़ नहीं दी जाती है। इसलिए तुम कभी ऐसी चीज़ भी माँग लेते हो कि अगर तुम्हें दे दी जाए तो तुम्हारा दीन किसी काम का न बचे। इसलिए तुम्हें बस वही चीज़ माँगना चाहिए जो टिकाऊ हो और जिसकी मुसीबत तुम्हारे सर न पड़ने वाली हो। रहा दुनिया का माल तो न यह तुम्हारे लिए रहेगा और न तुम इसके लिए रहोगे।
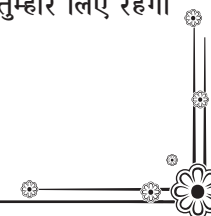
तशरीह (Explanation)

हज़रत अली[अ०] अपनी वसिय्यत के इस हिस्से में बन्दों पर ख़ुदा की रहमत की कुछ निशानियों को गिनवा रहे हैं:

उसने तुम्हें ख़ुद से बात करने का मौक़ा और दुआ माँगने की छूट दी है ताकि तुम उसे पुकारो और वह तुम्हारी आवाज़ पर तुम्हें जवाब दे।

उसने अपने और तुम्हारे बीच कोई पर्दा नहीं रखा है बल्कि तुम्हें सीधे अपने सामने हाज़िर होने की छूट दी है।

उसका करम यहाँ तक है कि तुम ने उसका हुक्म नहीं माना लेकिन उसने फिर भी तौबा का दरवाज़ा खुला रखा है ताकि तुम दोबारा उसकी तरफ़ लौट सको।

अगर वह चाहता तो फ़ौरन तुम्हें सज़ा दे देता लेकिन वह ऐसा नहीं करता क्योंकि उसकी रहमत ही कुछ ऐसी है।

तुम्हारे आमाल ऐसे थे कि वह तुम्हें नीचा दिखा सकता था लेकिन यह उसकी शान के ख़िलाफ़ था कि वह तुम्हें नीचा दिखाए।

तौबा को मानने में भी उसने सख़्ती नहीं रखी बल्कि आसानी से मान लेता है।

उसने हुक्म न मानने की वजह से तुम पर जुर्माना भी नहीं रखा।

गुनाहों से दूरी को उसने नेकी कहा है।

गुनाहों के बदले में एक अज़ाब और नेकी के बदले दस गुना सवाब रखा है।
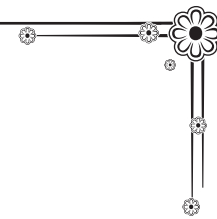
दुनिया और मौत के बारे में कुछ बातें

याद रखो! तुम आख़िरत के लिए पैदा हुए हो, न कि दुनिया के लिए। ख़त्म होने के लिए पैदा हुए हो, न कि बाक़ी रहने के लिए। मौत के लिए बने हो, न कि ज़िंदगी के लिए। तुम एक ऐसी जगह पर हो जिसका कोई ठीक नहीं और एक ऐसे घर में हो जो आख़िरत का ज़रूरी सामान इकट्ठा करने के लिए है और आख़िरत तक पहुँचने के लिए सिर्फ़ एक रास्ता है। तुम वह हो जिसका मौत पीछा कर रही है जिस से भागने वाला छुटकारा नहीं पा सकता। कितना ही कोई चाहे मौत के हाथ से नहीं निकल सकता। वह बहरहाल उसे पा ही लेती है। इसलिए इस बात से डरो कि कहीं तुम्हें मौत ऐसे गुनाहों की हालत में न आ जाए जिन से तौबा का ख़याल तुम दिल में लाते थे मगर वह गुनाह तुम्हारे और तौबा के बीच आ जाएँ। ऐसा हुआ तो समझ लो कि तुम ने अपने आप को हलाक कर डाला।

ऐ बेटा! मौत को और उस जगह को हर वक़्त याद रखना चाहिए जहाँ तुम्हें अचानक पहुँचना है

और जहाँ मौत के बाद जाना है ताकि जब वह आए तो तुम अपने बचाव का सामान इकट्ठा कर चुके हो और उसके लिए अपनी ताक़त मज़बूत कर चुके हो। कहीं वह अचानक तुम पर न टूट पड़े कि तुम्हें बेबस कर दे।

ख़बरदार! दुनियादारों की दुनिया से मोहब्बत और उनकी लालच कहीं तुम्हें धोखे में न डाल दे क्योंकि अल्लाह ने इसके बारे में अच्छी तरह से बता दिया है और इस दुनिया ने अपनी असलियत (Reality) ख़ुद भी बता दी है और अपनी बुराईयों को सब के सामने रख दिया है। इस दुनिया के चाहने वाले लोग, भौंकने वाले कुत्ते और फाड़ खाने वाले जानवर हैं जो आपस में एक-दूसरे पर भौंकते हैं। ताक़तवर कमज़ोर को निगले लेता है और बड़ा छोटे को कुचल देता है। इनमें कुछ चौपाए बंधे हुए और कुछ खुले हुए हैं जिन्होंने अपनी अक़्लें खो दी हैं और अंजाने रास्ते पर सवार हो लिये हैं। यह टेढ़ी-मेढ़ी वादियों में आफ़तों के मैदान में बे रोक-टोक चर रहे हैं, न इनका कोई मालिक है जो उनकी रखवाली करे और न कोई चरवाहा है जो इन्हें चराए। दुनिया ने इनको गुमराही के रास्ते पर लगा दिया है और इस्लाम की रौशनी से इनकी आँखें बन्द कर दी हैं। यह उसकी गुमराहियों में उलझे हुए और उसकी नेमतों में डूबे हैं। इन लोगों ने दुनिया को ही अपना ख़ुदा बना रखा है। दुनिया इन से खेल रही है और यह दुनिया से खेल रहे हैं और इसके आगे के सफ़र को भूले हुए हैं।

ठहरो! अंधेरा छटने दो। जैसे क़यामत के मैदान में सवारियाँ उतर ही पड़ी हैं। तेज़ क़दम चलने वालों के लिए वह वक़्त दूर नहीं कि जब वह अपने क़ाफ़िले से मिल जाएंगे।

तशरीह (Explanation)

इन्सान को आख़िरत के लिए पैदा किया गया है, न कि इस दुनिया के लिए।

इन्सान को इस दुनिया में नहीं रहना है बल्कि वह हर पल आख़िरत की तरफ़ बढ़ता जा रहा है।

आख़िरत का दरवाज़ा मौत है जिस से कोई भाग ही नहीं सकता, यहाँ तक ख़ुदा के ख़ास बन्दों को भी इसी दरवाज़े से जाना है।

मौत किसी भी पल आ सकती है इसलिए इन्सान को हर वक़्त इसके लिए तैयार रहना चाहिए और इस बात की तरफ़ अपना ध्यान रखना चाहिए कि कहीं गुनाहों की हालत में मौत न आ जाए क्योंकि उसके बाद तौबा का भी मौक़ा नहीं मिल पाएगा।

इसका सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि इन्सान मौत और उसके बाद के हालात को हर वक़्त याद करता रहे।

दुनियादारों के आराम और मौज-मस्ती को देखकर उसकी तरफ़ खिंचना नहीं चाहिए क्योंकि वह तो दुनिया की असलियत (Reality) को जानते ही नहीं हैं और जानकार इन्सान कभी यह ग़लती नहीं कर सकता।

दुनिया की नेमतों का इस्तेमाल ज़रूरी है लेकिन ख़तरा उस वक़्त पैदा हो जाता है जब इन्सान दुनिया को ही अपना ख़ुदा बना ले क्योंकि इसके बाद बर्बादी के सिवा कुछ नहीं रह जाता।

एक दिन सारे पर्दे निगाहों से हट जाएंगे और दुनिया की असलियत सब पर खुल जाएगी। फिर सब इस दुनिया से नफ़रत करेंगे लेकिन उस वक़्त काफ़ी देर हो चुकी होगी।
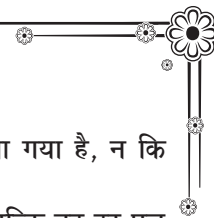
अख़लाक़ी नसीहतें

(Morals)

तुम्हें पता होना चाहिए कि जो आदमी दिन-रात की सवारी पर सवार है वह यूँ तो ठहरा हुआ है मगर असल में चल रहा है। ऐसा आदमी दिखने में तो एक जगह पर रूका हुआ है मगर आगे बढ़ता जा रहा है। यह बात भी यक़ीन के साथ जान लो कि तुम न तो अपनी हर उम्मीद को पूरा कर सकते और न जितनी ज़िन्दगी लेकर आए हो उस से आगे बढ़ सकते हो। तुम भी अपने पहले वालों के रास्ते पर ही हो इसलिए अपनी चाहतों व उम्मीदों और माल कमाने में बीच का रास्ता अपनाओ क्योंकि अकसर चाहत का रिज़ल्ट माल का गंवाना होता है। ज़रूरी नहीं है कि रोज़ी-रोटी की तलाश में लगा रहने वाला हर इन्सान कामयाब हो ही जाए और यह भी ज़रूरी नहीं है कि अपनी कोशिशों में बैलेंस से काम लेने वाले को कुछ न मिले। हर ज़िल्लत से अपने आप को दूर रखो, चाहे वह तुम्हें तुम्हारी मनपसंद चीज़ों तक पहुँचाने वाली ही क्यों न हो क्योंकि अगर अपनी इज़्ज़त खो दोगे तो इसके जैसी कोई चीज़ नहीं पा पाओगे। दूसरों के ग़ुलाम मत बनो क्योंकि अल्लाह ने तुम्हें आज़ाद बनाया है। उस भलाई में कोई बेहतरी नहीं है जो बुराई के ज़रिये मिले और उस आराम में भी कोई अच्छाई नहीं है जिसके लिए ज़िल्लत की परेशानियाँ झेलना पडें।

ख़बरदार! तुम्हें लालच की तेज़ सवारियाँ बर्बाद न कर दें। अगर हो सके तो यह करो कि अपने और अल्लाह के बीच किसी को अपनी नेमतों के लिए वास्ता (ज़रिया) न बनने दो क्योंकि तुम हर हाल में अपना हिस्सा और अपनी क़िस्मत पाकर रहोगे। दूसरे इन्सानों के एहसान तले दबे बिना वह थोड़ा जो अल्लाह से मिल जाए वह उस बहुत ज़्यादा से कहीं अच्छा है जो लोगों के हाथों से मिले। वैसे तो असल में जो कुछ मिलता है वह अल्लाह ही की तरफ़ से मिलता है।

ग़लत जगह पर चुप रहना ग़लत जगह पर ज़बान खोलने से आसान है। बर्तन में जो कुछ है उसे मुँह बन्द रखकर ही बचाया जा सकता है और जो कुछ तुम्हारे हाथ में है उसे बचाए रखना दूसरों के आगे हाथ फैलाने से मुझे ज़्यादा पसन्द है।

मायूसी की कड़वाहट सह लेना लोगों के सामने हाथ फैलाने से अच्छा है।

ख़ुद को गुनाहों से बचाकर मेहनत-मज़दूरी कर लेना गुनाहों में घिरी हुई दौलत से बेहतर है।

इन्सान अपने राज़ों को दूसरों से ज़्यादा ख़ुद ही छुपा सकता है।

बहुत से लोग ऐसी चीज़ की तलाश में रहते हैं जो उनके लिए नुक़सानदेह साबित होती है।

जो ज़्यादा बोलता है वह बकवास करने लगता है।

सोचकर काम करने वाला सही रास्ता देख लेता है।

अच्छों से मेलजोल रखोगे तो तुम भी अच्छे हो जाओगे। बुरों से बचे रहोगे तो उन के असर से भी बचे रहोगे।

सबसे बुरा खाना वह है जो हराम हो और सबसे बुरा ज़ुल्म वह है जो किसी कमज़ोर पर किया जाए।

जहाँ नर्मी से काम लेना ग़लत हो वहाँ सख़्ती करना ही नर्मी है।

कभी-कभी दवा बीमारी और बीमारी दवा बन जाती है।
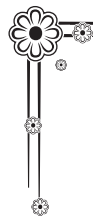
कभी हमारा बुरा चाहने वाला हमें भलाई का रास्ता सुझा दिया करता है और दोस्त धोखा दे जाता है।
ख़बरदार! उम्मीदों के सहारे पर न बैठना क्योंकि उम्मीदें बेवक़ूफ़ों की दौलत होती हैं। तजुर्बों को सजोए रखना ही समझदारी है। बेहतरीन तजुर्बा वह है जिससे सीख मिल जाए।
फ़ुरसत के मौक़े को हाथ से मत जाने दो, कहीं ऐसा न हो कि ख़ुद यही परेशानी की वजह बन जाए।
ज़रूरी नहीं है कि हर माँगने वाला और हर कोशिश करने वाला अपनी ठिकाना पा ही ले और हर जाने वाला पलट कर लौट ही आए।
सफ़र में काम आने वाले सामान को खो देना और अपनी क़यामत को बिगाड़ लेना बर्बादी है।
हर चीज़ का कोई न कोई रिज़ल्ट हुआ करता है।
जो तुम्हारे मुक़द्दर में है वह तुम तक पहुँच कर ही रहेगा। कारोबारी अपने को ख़तरों में डाला ही करता है, कभी थोड़ा माल ज़्यादा माल से ज़्यादा बरकत वाला साबित हो जाता है।
नीच इन्सान से मिलने वाली मदद में कोई भलाई नहीं और वह दोस्त बेकार है जो बदनाम हो।
जब तक ज़माने की सवारी तुम्हारे कंट्रोल में है उस से निबाह कर चलते रहो।
ज़्यादा की उम्मीद में ख़ुद को ख़तरों में मत डालो।
ख़बरदार! कहीं दुश्मनी व नफ़रत की सवारियाँ तुम से मुँहज़ोरी न करने लगें।

तशरीह (Explanation)

हज़रत अली[अ०] ने अपनी वसिय्यत के इस हिस्से में कुछ अख़्लाक़ी नसीहतें (Morals) की हैं जिनकी तरफ़ ध्यान देने से इन्सान की ज़िन्दगी में काफ़ी बदलाव आ सकते हैं:

लम्बी-लम्बी चाहतें व उम्मीदें रखना बेवक़ूफ़ी है क्योंकि हर चाहत और उम्मीद पूरी हो ही नहीं सकती।
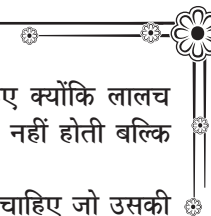
दुनियादारी में लालच नहीं करना चाहिए क्योंकि लालच दिन बदिन बढ़ती ही रहती है जो कभी ख़त्म नहीं होती बल्कि इन्सान को बर्बाद कर देती है।

इन्सान को कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जो उसकी इज़्ज़त के लिए नुक़सानदेह हो क्योंकि इज़्ज़त ही इन्सान की सबसे बड़ी दौलत है।

इन्सान को ख़ुदा ने आज़ाद पैदा किया है इसलिए उसे ख़ुदा के सिवा किसी का ग़ुलाम नहीं होना चाहिए यहाँ तक कि अपना ग़ुलाम भी नहीं।

इन्सान को नेमतें देने वाला सिर्फ़ ख़ुदा है इसलिए उसी से अपनी रोज़ी-रोटी की दुआ करना चाहिए लेकिन ख़ुदा ने भी इस काम के लिए अपने ज़रिए पैदा किए हैं जिनको अपनाना ज़रूरी है।

ज़िल्लत के साथ मिलने वाली ज़्यादा रोज़ी से कम मगर इज़्ज़त के साथ मिलने वाली रोज़ी इन्सान के लिए बेहतर है।

इन्सान के पास जो हो उसी पर राज़ी रहना अच्छा है। जो दूसरों के पास है उस पर नज़र न रखे क्योंकि इस तरह इन्सान की ज़िन्दगी का सुकून भी छिन जाता है।

पाकीज़गी को दाँव पर लगाकर आसानियाँ और राहतें बटोरने से ज़्यादा अच्छा अपनी पाकीज़गी को बचाकर सख़्ती में रहना है।

ज़्यादा बोलने का एक नुक़सान यह है कि इन्सान फ़ालतू बोलने लगता है।

सोचने-समझने के नतीजे में इन्सान को समझदारी मिल जाती है।

हराम रोज़ी एक तो ख़ुद बुरी है दूसरे इसका असर भी बहुत ख़तरनाक होता है। इसलिए इस से हमेशा बचना चाहिए।

अपनी उम्मीदों व चाहतों पर भरोसा करना समझदारों का काम नहीं है बल्कि यह तो नासमझों का काम है।

जब वक़्त इन्सान के हाथ से निकल जाता है तब वह हाथ मलता है। इसका इलाज सिर्फ़ यह है कि वक़्त को हाथ से जाने ही न दो।

हलाल माल कम ही क्यों न हो उसमें बरकत ज़्यादा होती है लेकिन हराम कितना ही ज़्यादा क्यों न हो उसमें बरकत नहीं होती।
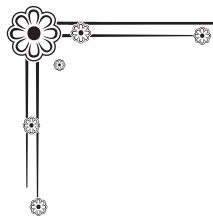
दोस्तों का हक़

अपने आप को अपने भाई के लिए इस बात पर तैयार करो कि जब वह दोस्ती तोड़े तो तुम उसे जोड़ो। वह मुँह फेरे तो तुम आगे बढ़ो और उसके साथ मेहरबानी करो। वह तुम्हारे लिए कंजूसी करे मगर तुम उस पर ख़र्च करो। वह तुम से दूर हो तो तुम उसके पास जाने की कोशिश करो। वह सख़्ती करता रहे मगर तुम नर्मी करो। वह ग़ल्ती करे मगर तुम उसके लिए कोई बहाना तलाश करो यहाँ तक कि जैसे तुम उसके ग़ुलाम हो और वह तुम्हें नेमतें देने वाला है। मगर ख़बरदार ऐसा कभी भी किसी ग़लत जगह पर न कर देना और किसी ग़लत इन्सान के साथ ऐसा न करना।
अपने दोस्त के दुश्मन को अपना दोस्त मत बनाओ वरना तुम भी उस दोस्त के दुश्मन समझ लिए जाओगे।
दोस्त को खरी-खरी नसीहत की बातें सुनाओ, चाहे उसे अच्छी लगें या बुरी।
ग़ुस्से के कड़वे घूँट पी जाओ क्योंकि मैंने रिज़ल्ट के हिसाब से इस से ज़्यादा मज़ेदार घूँट नहीं पिए।
जो तुम्हारे साथ सख़्ती करे तुम उस से नर्मी भरा बर्ताव करो क्योंकि इस बर्ताव से वह ख़ुद ही नर्म पड़ जाएगा।
दुश्मन पर एहसान करके उसके रास्तों को बंद कर दो क्योंकि दो तरह की कामयाबियों में यह ज़्यादा मज़े की कामयाबी है।
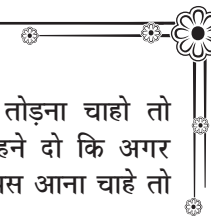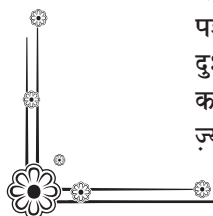
अपने किसी दोस्त से रिश्ता तोड़ना चाहो तो अपने दिल में इतनी जगह रहने दो कि अगर किसी दिन वह तुम्हारे पास वापस आना चाहे तो आ सके।
जो तुम्हारे बारे में अच्छा सोचता हो उसके इस अच्छा सोचने को सच्चा साबित करो।
आपसी रिश्तों की वजह से अपने किसी भाई का हक़ मत छीनो क्योंकि फिर वह भाई कहाँ रहा जिसका तुम हक़ छीन लो।
और देखो! तुम्हारे घर वाले तुम्हारे हाथों दुनिया भर में बर्बाद हो जाएं।
जो तुम से दूर होना चाहे उसके पीछे मत लगे रहो।
तुम्हारा दोस्त तुम से रिश्ता तोड़े तो तुम मोहब्बत के इस रिश्ते को जोड़ने में उस पर बाज़ी ले जाओ और वह बुराई करे तो तुम अच्छाई करने में उस से बढ़ जाओ।
ज़ालिम का ज़ुल्म तुम्हें भारी नहीं लगना चाहिए क्योंकि जहाँ वह ख़ुद को नुक़सान पहुँचा रहा है वहीं तुम्हारे फ़ायदे के लिए भी डटा हुआ है और जो तुम्हें फ़ाएदा पहुँचाए उसका बदला यह नहीं है कि तुम उस के साथ बुराई करो।

तशरीह (Explanation)

इमाम अली[अ०] इस हिस्से में दोस्ती और दोस्तों के कुछ हक़ बयान कर रहे हैं जो इस तरह हैं:

अगर दोस्त रिश्ता तोड़ ले तो तुम आगे बढ़कर फिर से उसके साथ रिश्ता बना लो।

अगर वह मुँह मोड़ ले तो तुम मेहरबान बन जाओ।

अगर वह कंजूस हो तो तुम कंजूसी मत करो।

अगर वह दूर हो जाए तो तुम उसके पास चले जाओ।

अगर वह सख़्ती करे तो तुम नर्मी से काम लो।

अगर वह ग़लती करे तो तुम माफ़ कर दो।
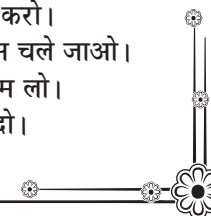
अपने दोस्त के दुश्मन को दोस्त न बनाओ।

अपने दोस्त को समझाओ, चाहे उसे अच्छा लगे या बुरा।

अगर तुम्हें अपने दोस्त पर ग़ुस्सा आ जाए तो अपने ग़ुस्से को पी जाओ।

दुश्मन पर एहसान करके उसके रास्तों को बंद कर दो क्योंकि दो तरह की कामयाबियों में यह ज़्यादा मज़े की कामयाबी है। इमाम की इस बात का मतलब यह है कि इन्सान दो तरह से अपने दुश्मन को कंट्रोल में कर सकता हैः एक लड़ झगड़कर और दूसरे प्यार-मोहब्बत से। अगर लड़कर या ताक़त के बल पर दुश्मन को घेर भी लिया जाए तो हमेशा उसकी तरफ़ से हमले का ख़तरा बना रहता है क्योंकि जैसे ही उसे मौक़ा मिलेगा वह हमला कर देगा लेकिन अगर प्यार-मोहब्बत का रास्ता अपनाया जाए तो यह ख़तरा अपने आप ही ख़त्म हो जाता है जिसकी वजह यह है कि अब दुश्मन, दुश्मन नहीं रहता बल्कि दोस्त में बदल में बदल जाता है। इसलिए इमाम कह रहे हैं कि मोहब्बत के रास्ते से हाथ आने वाली कामयाबी ज़्यादा मीठी और ज़्यादा मज़ेदार होती है।

अगर दोस्ती छोड़ना चाहो तो इतनी गुन्जाइश ज़रूर बाक़ी रखो कि अगर दोबारा दोस्ती करना चाहो तो कर सको।
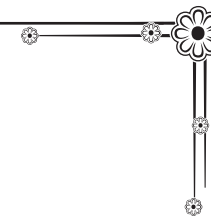
अख़्लाक़ी वेल्युज़

ऐ बेटा! यक़ीन करो कि रोज़ी दो तरह की होती हैः एक वह जिसकी तुम तलाश में रहते हो और एक वह जो तुम्हारी तलाश में लगी हुई है। अगर तुम उसकी तरफ़ न भी जाओ तब भी वह तुम तक आकर रहेगी।

ज़रूरत पड़ने पर गिड़गिड़ाना और मतलब निकल जाने पर बुरे अंदाज़ से पेश आना बहुत बुरी आदत है।

दुनिया से बस उतना ही अपना समझो जो तुम्हारे मरने के बाद काम आ सके।

अगर तुम हर उस चीज़ पर चीख़-पुकार मचाते हो जो तुम्हारे हाथ से चली जाए तो फिर हर उस चीज़ पर भी अफ़सोस करो जो तुम्हें नहीं मिली है।

आज के हालात से बाद के आने वाले हालात का अंदाज़ा लगाओ।

उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन पर अच्छी बात उस वक़्त तक काम नहीं करती जब तक उन्हें पूरी तरह तकलीफ़ न पहुँचा दी जाए क्योंकि अक़्लमन्द बातों से मान जाते हैं और जानवर लातों के बिना नहीं माना करते।

टूट पड़ने वाली मुसीबतों को सब्र की ढाल और पक्के यक़ीन से दूर किया करो।

जो बीच का रास्ता छोड़ देता है वह रास्ते से भटक

जाता है।
दोस्त रिश्तेदार की तरह होता है।
सच्चा दोस्त वह है जो पीठ-पीछे भी दोस्ती को निबाहे।
लालच व हवस से परेशानियाँ ज़रूर आती हैं।
बहुत से क़रीबी दोस्त, ग़ैरों से भी ज़्यादा दूर होते हैं और बहुत से ग़ैर, क़रीबियों से भी ज़्यादा पास होते हैं।
परदेसी वह है जिसका कोई दोस्त न हो।
जो हक़ से आगे बढ़ जाता है उसका रास्ता मुश्किल हो जाता है।
जो अपनी हैसियत से आगे नहीं बढ़ता उसकी इज़्ज़त व मुक़ाम बाक़ी रहता है।
तुम्हारे हाथों में सबसे ज़्यादा मज़बूत वसीला (ज़रिया) वह है जो तुम्हारे और अल्लाह के बीच है।
जो तुम्हारी परवाह नहीं करता वह तुम्हारा दुश्मन है।
फ़ुरसत के मौक़े बार-बार नहीं मिला करते।
कभी-कभी आँखों वाला सही रास्ता खो देता है और अंधा सही रास्ता पा लेता है।
बुराई को पीछे ढकेलते रहो क्योंकि जब चाहोगे उसकी तरफ़ बढ़ सकते हो।
जाहिल से दूर होना समझदार से रिश्ता जोड़ने के बराबर है।
जो दुनिया पर भरोसा कर लेता है दुनिया उसे धोखा दे जाती है और जो उसे बड़ा समझ बैठता है वह उसे नीचा दिखा देती है।
हर तीर चलाने वाले का निशाना ठीक नहीं बैठा करता।
जब हुकूमत बदलती है तो ज़माना बदल जाता है।
रास्ते से पहले अपने साथ चलने वाले और घर लेने से पहले पड़ौसी के बारे में पूछगछ ज़रूर कर लिया करो।
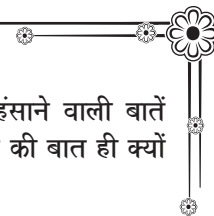
ख़बरदार! अपनी बातचीत में हंसाने वाली बातें मत लाओ, चाहे तुम किसी और की बात ही क्यों न बयान कर रहे हो।

तशरीह (Explanation)

इमाम अली[अ०] वसिय्यत के इस हिस्से में कुछ अख़्लाक़ी वेल्युज़ को बयान कर रहे हैं:

इन्सान को इस दुनिया से उतना ही लेना चाहिए जितने से काम चल सके।

अगर कोई चीज़ हाथ से चली जाए तो उस पर हंगामा नहीं मचाना चाहिए बल्कि यही सोचना चाहिए कि यह अपनी थी ही नहीं।

इन्सान और जानवर में एक फ़र्क़ यह है कि जानवरों पर अच्छी बातों का कोई असर नहीं होता लेकिन इन्सान का दिल अच्छी बात सुनकर उस से असर लेता है।

सच्चा दोस्त वह है जो दोस्त के पीछे भी दोस्ती का हक़ अदा करे।

जिसको अपने दोस्त की कोई फ़िक्र न हो वह असल में उसका दुश्मन है।

बुराई के रास्ते बहुत ज़्यादा हैं जो ख़ुद बख़ुद इन्सान के सामने खुलते जाते हैं लेकिन अच्छाई के रास्ते बहुत कम हैं। इसलिए इन्सान को अच्छाई के रास्तों की तलाश में लगे रहना चाहिए।
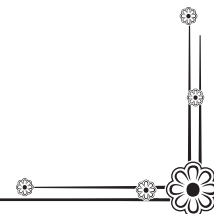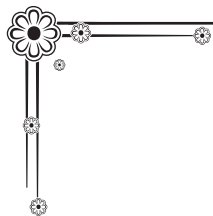
औरतों के बारे में कुछ ख़ास बातें

औरतों से कभी मश्वरा मत लो क्योंकि उनकी राय कमज़ोर और इरादा सुस्त होता है।
उन्हें पर्दे में बिठाकर उनकी आँखों को ताँक झाँक से दूर रखो क्योंकि पर्दे की सख़्ती उनकी इज़्ज़त-आबरू को बाक़ी रखने वाली है। उनका घरों से निकलना उतना ख़तरनाक नहीं होता जितना किसी ऐसे आदमी को घर में आने देना जिसपर भरोसा न हो।
अगर हो सके तो ऐसा करो कि वह तुम्हारे अलावा किसी और को पहचानती ही न हों।
औरत को उसके कामों के अलावा दूसरी छूट मत दो क्योंकि औरत एक फूल है, वह हुकूमत करने के लिए नहीं बनाई गई है।
ग़लत वक़्त पर अपने शक को ज़ाहिर मत किया करो क्योंकि इस से नेक चलन और पाक औरत भी ग़लत रास्ते पर चल पड़ती है।
अपने लिए काम करने वाले लोगों में से हर एक के ज़िम्मे एक ऐसा काम लगा दो जिसकी जवाबदेही उस से कर सको। इस तरीक़े से वह तुम्हारे कामों को एक-दूसरे पर नहीं टालेंगे।
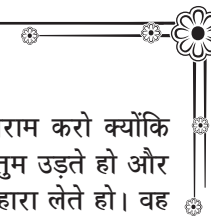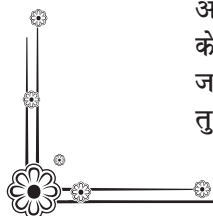
अपने क़ौम व क़बीले का एहतेराम करो क्योंकि वह तुम्हारे ऐसे पर हैं जिन से तुम उड़ते हो और ऐसी बुनियादें हैं जिनका तुम सहारा लेते हो। वह तुम्हारे हाथ-पैर हैं जिन से तुम हमला करते हो।
मैं तुम्हारे दीन और तुम्हारी दुनिया को अल्लाह के हवाले करता हूँ और उसी से तुम्हारे आज व कल और दुनिया व आख़िरत में तुम्हारे लिए भलाई का फ़ैसला चाहता हूँ।

वस्सलाम

तशरीह (Explanation)

हज़रत अली[अ०] ने अपनी वसिय्यत के इस आख़िरी हिस्से में औरतों के बारे में भी कुछ बातें की हैं:

औरतों से राय मत लो

इस बारे में कई बातें पाई जाती हैं:

एक यह है कि यह उस दौर के हालात की तरफ़ इशारा है जब 99% औरतें जाहिल हुआ करती थीं और ज़ाहिर है कि पढ़े-लिखे इन्सान का किसी जाहिल से राय लेना नासमझी के अलावा और कुछ नहीं है।

दूसरी सोच यह है कि यहाँ इमाम अली[अ०] औरत के जज़्बाती (Emotional) नेचर की तरफ़ इशारा कर रहे हैं कि उन से मश्वरा लेने में नुक़सान यह है कि औरतों में जज़्बात व इमोशंस ज़्यादा पाए जाते हैं जिसकी वजह से उनके मश्वरे में इमोशंस के पाए जाने का ख़तरा ज़्यादा होता है। इसलिए अगर कोई औरत अपनी इस कमी को दूर कर ले तो उस से राय लेने में कोई नुक़सान नहीं है।

तीसरी सोच यह है कि इमाम अली[अ०] उन ख़ास औरतों की तरफ़ इशारा कर रहे हैं जिनकी राय पर चलने से इस्लामी दुनिया का एक बड़ा हिस्सा तबाही के घाट उतर गया था और आज तक उस तबाही का असर देखा जा रहा है।
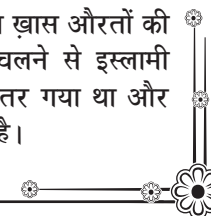
औरतों को पर्दे में रखो

यहाँ मर्दों को औरतों के पर्दे का ज़िम्मेदार बनाया गया है यानी मर्द कोई ऐसा काम न करे जिसकी वजह से औरतों को बेहिजाबी की छूट मिल जाए क्योंकि जब तक मर्द के अंदर ग़ैरत बाक़ी रहेगी तब तक औरत के अंदर भी शर्म व हया बाक़ी रहेगी। औरतों की बेहिजाबी में अक्सर मर्दों की ही ग़ल्ती होती है।

औरत फूल है

जहाँ मर्द को औरत का सरपरस्त (Gaurdian) बनाया गया है वहीं यह भी कहा गया है कि उन पर बिल्कुल ज़ुल्म व ज़्यादती न करो और उन से सख़्त काम मत लो क्योंकि औरत फूल की तरह नाज़ुक होती है। इसलिए उसको एक फूल की ही तरह संभाल कर रखना चाहिए।

Final